International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709, Print ISSN: 2664-8695
Received: 10-06-2024, Accepted: 11-07-2024, Published: 26-07-2024
Volume 6, Issue 2, 2024, Page No. 47-48

आर्थिक विकास एवं उद्यमीः एक अध्ययन

डॉ. बलभद्र प्रसाद देवांगन
प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, अशोका महाविद्यालय, उम्मेदपुर, सारंगढ़, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
देश के आर्थिक विकास में उद्यमी की भूमिका सर्वोपरी मान्य की गई है। आर्थिक विकास की रीढ़ उद्योगों को माना गया है एवं उद्योगों की स्थापना किसी प्रवर्तक द्वारा ही की जाती है जो उद्यम की स्थापना का विचार अपने मन में लिए वह इस हेतु समुचित संसाधन जुटाता है। उद्योग में लगे श्रम को पारिश्रमिक संगठन का भाग एवं अन्य साधनों के वितरण के बाद ही अपने लाभ का निर्धारण करता है। इसलिए उद्यमी की भूमिका आर्थिक विकास में अद्वितीय होती है।

मुख्य शब्दः उद्यमी, आर्थिक विकास, प्रवर्तक, संसाधन, संगठन, नवप्रवर्तक

अर्थशास्त्र में आर्थिक विकास से संबंधित दो मुख्य विचारधाराएं पाई जाती है। पहली विचारधारा जिसे परंपरागत विचारधारणा कहा जा सकता है आर्थिक विकास को आर्थिक रूप से परिभाषित करती है। परम्परागत विचारधारा में आर्थिक विकास एक ऐसी स्थिति हैं जिससे सफल राष्ट्रीय उत्पाद 5 से 7 प्रतिशत की दर से बढ़ता रहे और उत्पाडन एवं रोजगार संरचना में इस प्रकार परिवर्तन हो कि उसमें कृषि का हिस्सा कम होता जाए और निर्माण क्षेत्र तथा तृतीयक क्षेत्र (tertiarg manufacturing sector) का हिस्सा बढ़ता जाए।

दूसरी आधुनिक विचारधारा में आर्थिक विकास की संकल्पना को पुनः परिभाषित किया गया और आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य गरीबी, असमानता और बेरोजगारी का निवारण रखा गया। इस दौर में पुनवितरण के साथ संवृद्धि (redistribution with growth) का नारा दिया गया। इस संदर्भ में किन्डल बर्गर और ब्रूस हैरिक का कथन महत्वपूर्ण है, ''आर्थिक विकास की परिभाषा'' प्रायः लोगों के भौतिक कल्याण में सुधार के रूप में की जाती है। मेयर एवं बाल्डविन के अनुसार ''आर्थिक विकास एक एसी प्रक्रिया हैं जिसमें दीर्घकाल में अर्थव्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।''

उद्यमी (entrepreneur) शब्द का उद्रम फेंच शब्द enterpendre (इण्टरपेन्डर) से हुआ है। जिसका शाब्दिक अर्थ नए व्यवसाय की जोखिम को वहन करना इस शब्द का प्रयोग अभियानों (erpenditions) के लिए किया गया।

''मूलतः उद्यमी की पहचान तीन प्रमुख तत्वों से जुड़ी हुई हैं–प्रथम जोखिम वहन करना (risk bearing) दूसरे संसाधनों को एकत्रित करके संगढ़न की स्थापना करना (collection of resources and organçing) तथा अंतिम नवप्रवर्तन करना (innovating) अतः उद्यमी वह व्यक्ति होता हैं जो व्यवसाय में लाभप्रद अवसरों की खोज करता है, आर्थिक संसाधनों को संयोजित करता है, नवकरणों को जन्म देता है, तथा उद्यम में निहित जोखिम एवं अनिश्चितताओं का समुचित प्रबंध करता है।''

आर्थिक विकास में उद्यमी की भूमिका सर्वोपरि मान्य की गई हैं उद्यमी की भूमिका आर्थिक विकास में अद्वितीय होती है, मूलतः आर्थिक विकास में एक उद्यमी निम्न प्रकार से अपनी भूमिका का निर्वहन करता है–

(अ) नवप्रवर्तक के रूप में (As An Innovator)

प्रसिद्ध प्रबंध शास्त्री पीटर डूकर के अनुसार ''उद्यमी कुछ न कुछ नये व कुछ न कुछ भिन्न का सृजन करतें है। वे मूल्यों को परिवर्तित एवं रूपांतरित करते हैं'' प्रत्येक उद्यमी कुछ नया करने का विचार लेकर ही उद्यमी स्थापित करना चाहता है, क्योंकि जो पहले से ही है उसे वह पुनः बनाकर या लाकर किसे बेच पायेगा? अतः जब भी कोई साहसी कोई उद्योग स्थापित करने की योजना बनाता हैं तब वह उपभोक्ता की नब्ज बाजार का सर्वेक्षण एवं उपलब्ध साधनों का अनुबंधान करता है एवं एकदम कुछ नया देने का सदैव प्रयास करता है। उद्यमी चाहेगा कि उसे नवाचार एवं नवप्रर्वतन से ही लाभदायकता की स्थिति मिल सकती है। अतः एक उद्यमी नवप्रवर्तक या प्रवर्तनकर्ता के रूप में आर्थिक विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है वह निम्न प्रकार से नवप्रवर्तन करता है–

1. नव उत्पाद का परिचय
2. नये बाजार की खोज करना
3. उत्पाद की नई प्रक्रिया की शुरूआत
4. कच्चे माल के नये एवं श्रेष्ठ स्त्रोतो की खोज
5. औद्योगिक संगठन के नये एवं श्रेष्ठ प्रारूप का विकास करना।

(ब) रोजगार के अवसरो का सृजनकर्ता (Generater of Employment Opportunities)

प्रसिद्ध प्रबंध शास्त्री रिल्सन का यह कथन उल्लेखनीय है कि ''विकासशील देशों में उद्यमी रोजगार के अवसर प्रदान करने वाला होता है'' अर्थात बदले हुए परिवेश में अब हमारे युवकों को सरकार या किसी रोजगार एजेन्सी के पास जाने की अपेक्षा अपने क्षेत्र के उद्यमी की ओर आकर्षित होना पड़ेगा क्योंकि एक प्रगतिशील उद्यमी ही रोजगार के अवसरों को बच्चा सृजनकर्ता माना जाता है वह नये प्रयोग कर्ता है एवं नए–नए उद्योगों का आरम्भ करता है। अतः नये रोजगार के अवसरो की भी वही उत्पत्ति करता है। निम्न बिन्दुओं द्वारा इसे और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

1. नये उद्यमों की स्थापना
2. विद्यमान इकाई का विकास एवं विस्तार
3. आधुनिक तकनीक का प्रयोग
4. रूग्ण इकाइयों को पुनर्जीवित करना
5. संसाधनों का विदोहन करना
6. लाभों का पुर्नविनियोजन करके।

(स) आर्थिक विकास का अभिनन्दनीय सम्पूरक (Complimenting and Supplementing Economic Growth)

एक उद्यमी प्रत्येक राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिये उद्यमी का विकसित होना अनिवार्य है। साहसिकता को विकसित करके ही

अनेक आर्थिक सामाजिक अनेक आर्थिक सामाजिक समस्याओं जैसे बेरोजगारी गरीबी आर्थिक असमानता, न्यून उत्पादन एवं निम्न जीवन स्तर आदि से छुटकारा पाया जा सकता है तथा एक आदर्श औद्योगिक समाज की रचना की जा सकती है। उद्यमी का आर्थिक विकास के अभिनन्दनीय सम्पूरक होना निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट किया जा सकता है।

1. आर्थिक विकास को गति
2. संतुलित विकास
3. साधनो का सर्वोत्तम उपयोग
4. रोजगार के अवसरो में वृद्धि
5. पूंजी निर्माण में सहायक
6. राष्ट्रीय विकास में योगदान
7. आधुनिक उत्पादन व्यवस्था का अंग।

(द) उद्योगों के संतुलित क्षेत्रीय विकास एवं सामाजिक स्थायित्व का कारक

उद्योगों के क्षेत्रीय असंतुलन में सरकार भी कुछ हद तक शामिल रहती है। सरकार उद्योगो की श्रेणी अ ब स तक शामिल रहती है। आदि देकर इसमें विभेद करती है एवं इनकी श्रेणीयों के आधार पर बुनियादी सुविधाएं मुहैया कराती है लेकिन एक साहसी ऐसा कदापि नहीं करता है। वह सैदव इस प्रकार के उद्योगों को स्थापित करता है। वह सदैव इस प्रकार के उद्योगो को स्थापित करता है जो लाभप्रद हो चाहे वह किसी भी स्थान क्षेत्र एवं श्रेणी में आता हो। उद्यमी इस प्रकार से संतुलित क्षेत्रीय विकास की परिकल्पना को साकार करता है तथा प्रत्येक क्षेत्र में उद्यर्म स्थापित करके सामाजिक स्थायित्व के कारक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। उद्यमी के इस प्रकार के योगदान को निम्न बिंदुओ द्वारा स्पष्ट किया जा सकता हैः–

1. परियोजना नियोजन।
2. उद्योगों का नेतृत्वकर्ता।
3. प्ररेक प्रतिनिधि।
4. आर्थिक सामाजिक समस्याओं में कमी।
5. आत्मनिर्भर समाज की स्थापना।
6. सामाजिक परिवर्तनों का उपकरण।
7. सामाजिक उत्तरदायित्व।
8. सामाजिक संतुष्टि।

(इ) निर्यात संवर्द्धक एवं आयात प्रतिस्थापक के रूप में (As an Export Promotor and and Import Substitutor)

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो. मेयर एवं बेल्डियिन ने कहा है कि, ''आर्थिक, विकास स्वाभाविक परिणाम की मौती अपने आप घटित नहीं होता। जब आर्थिक दिशाएं एक अर्थ में ढीक होती हैं तो एक उत्प्रेरक तत्व आवश्यक होता है, जो साहसिक किया कर सके।''

प्रत्येक अर्थव्यवस्था में, इसके भौतिक एवं मानवीय संसाधनों, औद्योगिक दशाओं राजनैतिक प्रणाली सामाजिक मूल्य आदि के अनुसार आर्थिक विकास में उद्यमिता की भूमिका की बदल जाती है। देश का विद्यमान आर्थिक–सामाजिक ढांचा ही यह निश्चित करता है कि वहां किस प्रकार के उद्यमियों का विकास होगा। यहां विकास के अवसर अधिक होते हैं, वहां आर्थिक विकास में उद्यमियों का योगदान भी अधिक होता है। अविकसित अर्थव्यवस्था में, जहां पूंजी, दक्ष श्रम तथा विकास की आधारभूत अत्यन्त न्यून होती है, साथ ही, कोषों की कमी अपूर्ण बाजार व तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण अविकसित देशों में उद्योग, प्राय छोटे पैमाने पर ही स्थापित किये जाते हैं। ऐसे देशों में लघु उद्यमियों के विकसित होने के और भी मुख्य कारण्एा हैं, जैसे विकेन्द्रीकृत औद्योगिक संरचना, पूंजी व कौशल की गतिशीलता आदि की आवश्यकता। विकासशील अर्थव्यवस्था में तीव्र आर्थिक विकास की दृष्टि से सरकार भी लघु साहस को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक प्रेरणाएं उपलब्ध कराती है। हमारे देश में भी सरकार लघु उद्योगों के विकास को उत्पादकता बढ़ाने, तकनीकी परामर्श एवं सुख सुविधाएं उपलब्ध कराने, गांवों में उद्योगों का प्रसार करने, सहायक उद्योगों की स्थापना करने तथा सहकारी स्तर पर लघु उद्योग खोलने पर निरंतर बल दे रही है। इन सबका परिणाम हो रहा है कि हमारे देश का निर्यात लगातार बढ़ रहा है एवं कई ऐसी वस्तुएं हम स्वयं बना पा रहे हैं जो पहले कभी हमें आयात करनी पड़ती थी। इस प्रकार उद्यमी निर्यात के संवर्द्धन एवं आयात के प्रतिस्थापन में अपनी महति भूमिका निभा रहे हैं। निम्न बिंदुओ के अध्ययन से यह बात अक्षरक्ष सही साबित हो रही हैः

1. बड़े उद्योगों को राहत।
2. निर्यात ईकाईयों को प्रोत्साहन।
3. नवकरण द्वारा आयात प्रतिस्थापन।
4. प्रगतिशील व्यावसायिक नीतियां।
5. वैश्विक सांस्कृतिक वातावरण।
6. निर्यात संबंधी व्यावसायिक विचार।
7. सकारात्मक विचारक के रूप में।

निष्कर्ष

इस प्रकार देश का उद्यमी यासाहसी हमारे देश में आर्थिक विकास का वाहक हैं तथा चाहे कितनी भी विपरित परिस्थितियां आएं हमारे उद्यी टाटा, बिड़ला, बजाज, अंबानी, शाह एवं ऐसे अनगिनत नामों से हमारी अर्थव्यवस्था को सदैव पटरी पर कायम रखने में सफल एवं सक्षम रहे हैं। देश के आर्थिक विकास में साहसी या उद्यमी की भूमिका निर्वाविवाद रूप से अव्वल नम्बर पर आती है क्योंकि भूमि की उपलब्धि हेतु साहसी ही शासन या बाजार की अन्य शक्तियों से मिलकर निश्चित करता है, श्रम को उसकी उपयोगिता के मान से व कुशलता के आधार पर आर्थिक सहयोग व कार्यक्षमता में वृद्धि भी उद्यमी ही करता है। पूंजीपति एवं साहसी कई जगह पर दो सकता है, एक ही हो लेकिन अधिकांश स्थानों पर उद्यमी द्वारा दी पूंजी की भी व्यवस्था करके नये उत्पादों का ढेर बाजार में लगाने के उदाहरण मिले हैं इसी प्रकार एक सुदृढ़ संगठन भी साहसी के साहस के बल पर ही खड़ा किया जा सकता है। उद्यमी उत्पादन के चारों साधनों का परस्पर समन्वय वैज्ञानिक ढंग से करके वृहत उत्पादन श्रृंखला तैयार करता है एवं देश की जनता के उनकी उपेक्षा के अनुरूप वस्तुएं उपलब्ध कराता है तथा राष्ट्र के पूर्ण विकास में अपनी महति भूमिका निभाता है।

संदर्भ सूची

1. उद्यमिता विकास–डा. यू. सी. गुप्ता, डा. एल. डी. गुप्ता।
2. प्रबंध अवधारणाएं एवं संगठनात्मक व्यवहार–जी. एस. सुधा।
3. व्यावसायिक वातावरण–डा. बी. पी. गुप्ता, डॉ. एच. आर. स्वामी।